INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 3 | APRIL - 2022

नवजात शिशु की देखभाल तथा उनमें होने वाली जटिलताओं का अध्ययन

पूनम मिश्रा
शोधार्थी, समाजशास्त्र, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –
इस पृथ्वी पर मां एवं बच्चे का रिश्ता बहुत ही अनमोल माना जाता है। जिसे शिशु एवं मां के अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा कदापि नहीं समझ सकता है, अतः एक मां ही अपने शिशु को बेहतर तरीके से समझ सकती है। इस दृष्टि से महिला के प्रसव उपरांत शिशु के जन्म लेते ही उसकी देखभाल अत्यन्त ही सावधानीपूर्वक की जानी चाहिए। जब नवजात शिशु रोता है तो मां समझ जाती है कि मेरे शिशु को कोई तकलीफ है, जिसे दूर करने के लिए मां हर संभव कोशिश करती है।

मुख्य शब्द – नवजात शिशु, देखभाल, मां एवं जटिलताएं ।

प्रस्तावना –

नवजात शिशु के रोने पर यह आवश्यक नहीं है कि उसे कोई परेशानी है, विशेषज्ञों का मानना है कि रोना शिशु के स्वास्थ्य के लिए एक अच्छा व्यायाम या अभ्यास होता है। शिशु के रोने पर माताओं द्वारा उसे कदापि मारना व डांटना नहीं चाहिए, अपितु मां व अन्य परिवार के लोगों द्वारा उसे प्यार से शान्त कराना चाहिए। यदि शिशु प्यार से शान्त करने के बाद भी अधिक रोये तो ऐसी दशा में उन्हें शिशु विशेषज्ञों को दिखाने चाहिए। प्रायः नवजात शिशु पेट में तकलीफ होने का कारण ही सर्वाधिक रोते हैं। नवजात शिशु को अधिक समय तक अकेला नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने पर शिशु और अधिक रोने लगते हैं।

प्रसव के पश्चात नवजात शिशु हेतु माँ का दूध अमृत के समान माना जाता है और मां को अपने नवजात शिशु को तब तक दूध पिलाना चाहिए जब तक वह पूर्ण रूप से संतुष्ट न हो जाय, पत्येक मां को प्रसव के पश्चात् 1 घण्टे के भीतर अपने नवजात शिशु को स्तनपान अवश्यक कराना चाहिए क्योंकि मां का यह दूध बच्चे के स्वास्थ्य के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है।

नवजात शिशु का मालिश बहुत ही सावधानी के साथ किया जाना चाहिए, क्योंकि शिशु का शरीर अत्यन्त ही नाजुक व कोमल होता है। शिशु के मालिश से उसका शारीरिक विकास अच्छे तरीकों से होता है, प्रत्येक शिशु का मालिश प्रारम्भ में दो तीन बार किया जाना चाहिए। नवजात शिशु का मालिश जैतून के तेल, बादाम का तेल या बेबी ऑयल तेल से प्रारम्भ में किया जाना चाहिए, शिशुओं का मालिश हमेशा हल्के हाथों से किया जाना चाहिए, न कि भारी हाथों से।

नवजात शिशुओं को स्नान कराते समय विशेष सावधानी की जरूरत होती है। शिशु को स्नान कराने से पूर्व एक टब में हल्का गुनगुना पानी रख लेना चाहिए, यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि पानी अधिक गर्म कदापि न हो, शिशु के स्नान कराने के लिए उसे टब में बैठाना चाहिए और यह तभी करना चाहिए जब

शिशु बैठने के योग्य हो जाते हैं। शिशु के टब में बैठाकर नहलाते समय उसकी गर्दन व पीछे की ओर से हाथों से सहारा देना चाहिए। नवजात शिशु को टब में बिठाने के पश्चात् टब में ऊपर से पानी कभी भी नहीं भरना चाहिए, शीतऋतु में नवजात शिशु को प्रतिदिन नहलाने की जरूरत नहीं होती है और शिशु को नहलाते समय गर्म साबुन का ही प्रयोग करना चाहिए, ताकि शिशु को ठण्ड की शिकायत न होने पाय।

विश्लेषण –

नवजात शिशुओं की देखरेख से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करने के बाद उनकी जटिलताओं पर प्रकाश डालना शोधार्थी का उत्तरदायित्व बनता है कि नवजात शिशुओं में प्रमुख रूप से कौन–कौन सी जटिलतायें विशेष रूप में पायी जाती है। नवजात शिशुओं की जटिलताओं पर प्रकाश डालने हेतु प्रथम दृष्टि में उनकी संक्रमण सम्बन्धी जटिलताओं का विश्लेषण करना शोधार्थी द्वारा सूचीबद्ध किया गया है, जो क्रमशः इस प्रकार है –

नवजात बच्चों में प्रायः गंभीर भयावह बीमारी का होना और उसके पश्चात् मृत्यु हो जाने के पीछे प्रमुख कारण है कि शिशुओं का संक्रमण होना तथा यह संक्रमण कहां से शिशुओं का मिलते हैं? इस परिप्रेक्ष्य में विशेषज्ञों का कहना है कि शिशुओं में संक्रमण सर्वाधिक मां से आते हैं, यदि प्रसव के बाद मां को बुखार, योनि का संक्रमण, बार–बार असुरक्षित योनि जांच एवं कुपोषण आदि से संक्रमण नवजात शिशुओं में आते हैं, इनमें प्रमुख रूप से शिशु जन्म के बाद उसकी नाल को असुरक्षित तरीके से काटना, बिना हाथ को साबुन से धोये शिशु को स्पर्श करना और गोदी में असुरक्षित तरीके से लेकिन खिलाने इत्यादि तरीका से शिशु संक्रमण की चपेट में आते हैं। नवजात शिशुओं में संक्रमण की कोई विशेष पहचान तो नहीं होती है, फिर शिशु के हावभाव से चिकित्सकों की मदद लेनी चाहिए। सामान्य रूप से नवजात शिशुओं में दूध का सेवन न करना, तापमान का कम होना, स्वभाव से चिड़चिड़ा दिखना, अत्यधिक रोना, शान्त पड़ना, श्वास लेने की गति का अचानक कम व अधिक होना, दौरे का आना, शरीर के अंगों में फोड़े फुंसी का होना तथा नाल का पकना इत्यादि संक्रमण दिखते हैं तो इनकी पुष्टि हेतु पेशेवरों द्वारा खून की जांच, पेशाब की जांच, एक्सरे व रीढ़ की हड्डी से पानी का सैम्पल लेकर जांच करनी पड़ सकती है।

प्रायः नवजात शिशुओं में संक्रमण बहुत ही तेजी से ग्रोथ करता है और शिशु के लिए जानलेवा भी हो सकता है अतः उन्हें दवाइ इंजेक्शन के रूप में देनी चाहिए। शिशुओं का इलाज कम से कम 10–21 दिनों तक निरन्तर चल सकता है।

नवजात शिशुओं में संक्रमण होने से गम्भीर लक्षणों में शिशु शान्त पड़ना, दौरे आना, उल्टी होना, पेट का फूलना, शरीर में सूजन, चमड़ी का अकड़ जाना, शरीर का तापमान कम या अधिक होना तथा दस्त आदि मुख्य है। शिशुओं में उक्त सभी संक्रमण का उपचार की अपेक्षा बचाव अधिक फायदेमंद है। इसके लिए प्रत्येक मां को गर्भावस्था के समय उचित पोषक आहार एवं आराम की जरूरत होती है। गर्भावस्था के दौरान सभी माताओं को टिटनेस के दो बार इंजेक्शन अनिवार्य रूप से लगवाने चाहिए और यह इंजेक्शन प्रथम बार 4–6 माह के मध्य लगवाना चाहिए। प्रसव को प्रशिक्षित दाई एवं योग्य चिकित्सकों से ही करवाना चाहिए, महिलाओं की योनि को स्वच्छ रखना चाहिए, गर्भधारण के बाद प्रसव के तीन माह पूर्व से ही सम्बन्ध बनाने से परहेज करना चाहिए। यदि गर्भवती महिला संक्रमित होती है ता उसका तत्काल इलाज कराना चाहिए। नवजात शिशुओं की सदैव साबुन से हाथ धोकर ही देखभाल करना चाहिए, इन सभी उपायों से नवजात शिशु को संक्रमण से बचाया जा सकता है और एक कुशल शिशु की देखरेख की जा सकती है।

सामान्य तौर पर शिशु एक दिन में अनेक वस्त्र खराब करते है, अतः इसे दृष्टिगत रखते हुए शिशुओं के वस्त्र मुलायम होने चाहिए। नवजात शिशुओं के वस्त्रों को साफ करने हेतु अच्छी गुणवत्ता वाले सॉफ्ट पाउडर व टिकिया का उपयोग करना चाहिए और कपड़ो को धोने के बाद उन्हें डिटाल के लिक्विड व पानी के साथ धुलकर निकालना चाहिए ताकि शिशुओं की त्वचा को कोई इंफेक्शन व नुकसान न होने पाये।

नवजात बच्चों के कॉस्मेटिक्स हेतु सामग्री ऐसी होनी चाहिए जो शिशुओं की त्वचा को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचाये। शिशुओं के कॉस्मेटिक्स में प्रमुख रूप से बेबी आयल, बेबी सोप, बेबी शैंपू, बेबी पाउडर एवं बेबी क्रीम इत्यादि है। शिशुओं को नहलाते समय सोप एवं शैम्पू का उपयोग करते समय यह विशेष रूप से

ध्यान रखना चाहिए कि यह बच्चों की आंखों में न जाय। यदि संभव हो सके तो शिशुओं के कॉस्मेटिक्स का उपयोग करने से पूव अपने पारिवारिक चिकित्सक से सलाह ले लेनी चाहिए।

शिशुओं के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें समय–समय पर शिशु व बाल चिकित्सकों को दिखाते रहना चाहिए। शिशु के वजन पर विशेष ध्यान देना चाहिए, शिशुओं को लगने वाले प्रत्येक टीके को ध्यान से समय पर लगवा लेना चाहिए, शिशु के जन्म अवस्था से लेकर लगने वाले सभी टीकों की सूची को संभाल कर रखना चाहिए क्योंकि शिशु के जन्म से लेकर 16 वर्ष तक की उम्र तक अनेक टीके लगते हैं। नवजात शिशु को पिलाई जाने वाली सभी खुराक को भी अनिवार्य रूप से पिलाई जाने चाहिए।

शिशुओं के शरीर में किसी अज्ञात सिंड्रोम के कारण उनके शरीर में अविकसितता आ जाती है। ऐसी दशा में शिशुओं के शरीर पर बालों का न आना एवं शारीरिक विकास का न होना आदि इसके लक्षण हैं, ऐसे शिशुओं के शरीर में शुष्कता एवं झुर्रियां इत्यादि आयु बढ़ने के साथ ही दिखने लगती है, इनका कोई चिकित्सकीय इलाज नहीं होता और कुछ समय व्यतीत होने के बाद शिशु की मृत्यु हो जाती है। अतः ऐसी दशा में शिशुओं के प्रत्येक आवरण व व्यवहार पर नित्य ध्यान देना चाहिए।

अधिकांशतः कम वजन/भार वाले शिशुओ में सर्दी के दिनों में अच्छे से देखभाल न होने के कारण हो जाता है या फिर शिशुओं के लंग्स विकसित न होने अथवा दिमागी संतुलन उम्र के अनुसार विकसित न होने के कारण भी उनकी मृत्यु हो जाती है, अतः शिशुओं की प्रत्येक मौसम में उचित ध्यान देने की जरूरत होती है ताकि शिशुओं की अचानक मृत्यु न हो सके।

देश में नवजात शिशुओं के मृत्यु का मुख्य कारण है। प्री–मैच्योरिटी नवजात शिशु का संक्रमण, जन्म सम्बन्धी जटिलतायें और जन्मजात विकृतियां इत्यादि। आज उक्त सभी कारणों में काफी कमी आयी है, जिसके पीछे प्रमुख कारण है, शासन स्तर पर सफल व सशक्त प्रयास किया जाना। परन्तु अभी भी इसकी स्थिति भयावह है यह स्थिति उन क्षेत्रों में अभी भी अधिक खराब है, जहां पर महिलाओं का प्रसव संस्थागत नहीं हो रहे हैं, अतः यदि कोई शिशु ऐसी किसी भी आपातकालीन स्थिति में जन्म लेता है तो एक घण्टे का सुनहरा समय आने जाने में ही चला जाता है और इससे ऐसे शिशुओं को बचाना बहुत ही मुश्किल हो जाता है, ऐसी स्थिति में शिशुओं के पेट में गड़बड़ी, जन्म के समय घाव लगना इत्यादि अनेक ऐसे कारण हैं ,जिससे शिशुओ को बिना चिकित्सा के स्वस्थ नहीं किया जा सकता है। नवजात शिशुओं को कमजोर होने पर डायरिया, पीलिया, थकान, सांस लेने में तकलीफ, चिड़चिड़ापन, फोरसेप मार्क, ब्लू बेबीज इत्यादि अनेक ऐसी बीमारी है, जिनका समय रहते शिशुओं का इलाज किया जाना अत्यन्त ही आवश्यक है। नवजात शिशु जन्म के बाद कमजोर न हो, इसके लिए प्रत्येक महिला को गर्भधारण करते ही उचित भोजन व व्यायाम पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ताकि उनका बच्चा जन्म के बाद कमजोर न हो, यदि वह कमजोर होता है, तो उसे संक्रमण होने व उपर्युक्त अनेक बीमारियों से ग्रसित होने की सभावना अधिक बढ़ जाती है। अतः प्रत्येक महिला को अपने खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिससे गर्भधारण के बाद व शिशु के जन्म के समय किसी समस्या का सामना न करना पड़े।

निष्कर्ष –

नवजात शिशुओं की देखभाल से सम्बन्धित उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण करने के साथ हो जाता है कि प्रसव के बाद से ही नवजात शिशु का उचित तरीकों से नित्य देखभाल करते रहना चाहिए। यदि शिशुओं की देखरेख में माताओं द्वारा जरा भी लापरवाही की गयी तो नवजात शिशु किसी भी बीमारी से अतिशीघ्र संक्रमित हो सकता है। अतः प्रत्येक मां का अपने नवजात शिशु के स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए। शिशुओं को समय–समय पर पिलायी जाने वाली सभी दवाओं को उचित समय पर पिलाना चाहिए, इसके लिए नवजात शिशु के नाम को अपने आंगनबाड़ी केन्द्रों की नायिका में दर्ज कराया जाना चाहिए, ताकि निर्धारण उम पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा उनकी माताओं को सूचित कर सभी स्वास्थ्य से सम्बन्धित सुविधायें समय पर उपलब्ध करायी जा सके। इसके लिए सभी माताओं को सजग रहने की नितान्त आवश्यकता है।

संदर्भ –

1.	सक्सेना, ऋषभ कृष्ण	ग्रामीण स्वास्थ्य और नयी स्वास्थ्य नीति	2015	सीरियल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
2.	शर्मा, वी.पी.	रिसर्च मैथडालाजी	2004	पंचशील प्रकाशन, जयपुर
3.	श्रीवास्तव, सीमा	भारत में मातृत्व व शिशु मृत्यु दर	2015	हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
4.	वीणा, पाणि सिंह	ग्रामीण स्वास्थ्य संरक्षण	1992	क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
5.	सारस्वत, तप्तु	ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवायें	2015	क्लाशिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
6.	कुमार, आर	भारत में बाल विकास (स्वास्थ्य कल्याण और प्रबंधन)	1988	आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7.	देसाई, एएन	परिवार और बाल कल्याण योजना	1990	आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
8.	कुमार,ए.	मानव संसाधन नीतियां और दृष्टिकोण में बाल	2002	स्वरूप और संस, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली